जन्म
१० अगस्त, १८५४ ई०

स्वर्गीय बाबू चिन्तामणि घोष

मृत्यु
११ अगस्त, १९२८ ई०

[illegible]] अगस्त १९२८—श्रावण १९८५ [संख्या ८

इंडियन प्रेस के जन्मदाता का स्वर्गवास

[illegible] ! हमारे सुन्दर पत्र 'बाल-सखा' के जन्मदाता बाबू चिन्ता-[illegible] अब इस संसार में नहीं रहे। गत ११ वीं अगस्त को ९ [illegible] से उनका देहान्त हो गया। इससे हम बहुत दुःखी हैं। [illegible] हमारे देश में एक ऐसे महापुरुष की कमी हो गई है जो कभी [illegible]।

[illegible] का जन्म कलकत्ता के क़रीब बालीग्राम में १० अगस्त [illegible] में हुआ था। पिता का नाम माधवचन्द्र घोष था। बाबू माधव-

चन्द्र घोष हमारे प्रान्त में कमसरियट में मुलाज़िम थे। अच्छे पद पर थे और धनोपार्जन भी खूब किया था। बाबू चिन्तामणि घोष अभी बालक ही थे कि पिता का प्रयाग में देहान्त हो गया। और उन्होंने जो धन इकट्ठा किया था वह भी चला गया। उनकी कमाई से बाबू चिन्तामणि घोष को कुछ नहीं मिला।

ऐसी दशा में माता ने देश को लौटना उचित न समझा। बालक चिन्तामणि में उनका बड़ा भरोसा था। इससे यहीं रहकर वे अपने इस होनहार बालक को पढ़ाने-लिखाने लगीं। बाबू चिन्तामणि अपनी माता के बड़े भक्त थे। माता को कोई आर्थिक कष्ट न होने देने के लिए उन्होंने १३ वर्ष की ही अवस्था में पानियर प्रेस में नौकरी करली। इस प्रकार उनकी स्कूल की पढ़ाई तो खतम हो गई पर अपने आप वे सदैव कुछ न कुछ सीखने का उपाय करते रहते थे। छुट्टी मिलने पर वे प्रेस में इधर उधर घूमा करते थे और सारे कल-पुर्ज़ों को ग़ौर से देखा करते थे। उनका यह ढङ्ग देख कर उनके साथी लोग बड़ा मज़ाक उड़ाते थे। पर बाबू चिन्तामणि इन बातों से ज़रा भी नहीं डिगते थे। धीरे धीरे उन्हें प्रेस के बारे में बहुत सी बातें मालूम हो गईं।

पानियर प्रेस में ६-७ वर्ष काम करने के बाद वे हवा घर में हेड क्लर्क हो गये। उस समय उनकी अवस्था सिर्फ़ १९ वर्ष की थी। फिर भी आफ़िस के प्रधान इलियड साहब उनके कामों से उनसे बहुत खुश रहा करते थे। एक दिन इलियड साहब ने उन्हें एक बड़ा ही कठिन हिसाब-पत्र दिया। साहब का यह विश्वास था कि उसमें तीन दिन से कम किसी हालत में नहीं लग सकते। पर बाबू चिन्तामणि ने उसे कुछ ही घंटों में ठीक करके साहब के सामने उपस्थित कर दिया। यह देख कर साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बाबू साहब की तनख्वाह बढ़ा दी और ऊँचे दर्जे का गणित सीखने में वे उनकी पूरी पूरी सहायता भी करने लगे।

इन्हीं दिनों आपने एक पुरानी हाथ से छापने की मशीन नीलाम में ली। कुछ पुराने टाइप भी लिये और घर पर अपने आप प्रेस के कामों का तजुर्बा करने लगे। ज़रा उनकी मेहनत को तो देखिए। दिन भर आफ़िस में काम करते और बड़ी रात तक घर में प्रेस का काम! यही इंडियन प्रेस का आरम्भ है। बढ़ते बढ़ते वही आज विशाल इंडियन प्रेस के रूप में बदल गया है।

बाबू चिन्तामणि घोष को काम चलाऊ कोई भी चीज़ पसन्द नहीं थी। वे अच्छे से अच्छा प्रेस, और अच्छी से अच्छी छपाई चाहते थे। अपने काम में वे सबसे आगे रहना चाहते थे। इसलिए उन्होंने छपाई और मशीनों के सम्बन्ध में अंगरेज़ी में जितनी किताबें निकली थीं सब को मँगा कर पढ़ीं। कभी कभी वे रात रात भर पढ़ते ही रह जाते थे। प्रेस के काम के लिए एक खास इमारत होनी चाहिए। यह सोच कर उन्होंने इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के पास एक सुन्दर प्रेस-भवन बनवाया। प्रेस की वह इमारत यूनीवर्सिटी ने खरीद ली। इससे आपने कम्पनी बाग़ के पास दूसरी विशाल इमारत बनवाई। अपने इस उद्योग में वे पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। आज इंडियन प्रेस हिन्दुस्तान में सबसे अच्छा प्रेस समझा जाता है।

ऊपर हम लिख आये हैं कि बाबू चिन्तामणि घोष अपनी माता के बड़े भक्त थे। यही कारण है कि वे माता ही के समान दयालु-हृदय और धार्मिक भी थे। विधवाओं और अनाथों की वे बड़ी सहायता करते थे। जो भी उनसे सहायता की प्रार्थना करता था, वापस नहीं जाता था। हरिपद इनफरमरी के नाम से उन्होंने एक बड़ा अस्पताल भी खुलवाया है। इस अस्पताल में सब तरह के रोगों की मुफ़्त चिकित्सा होती है।

बाबू चिन्तामणि घोष ने हमारी हिन्दी भाषा का जो उपकार किया उसका तो कुछ कहना ही नहीं। पर हम बालक उनके विशेष रूप से ऋणी हैं। हमारे

लिए हिन्दी में अच्छी अच्छी पुस्तकें और मासिक पत्र निकालनेवाले पहले महापुरुष वे ही थे। उन्हीं की कृपा से आज हम बालक भी बाल-रामायण, बाल-महाभारत, बाल-मनुस्मृति, बाल-स्वास्थ्य-रक्षा, बाल-पुराण आदि पढ़कर अपने प्राचीन ग्रन्थों की बहुत सी बातें जान लेते हैं। जिसने हमारा इतना बड़ा उपकार किया उसके बारे में हमें बहुत पहले जान लेना चाहिए था। पर बाबू चिन्तामणि घोष अपने गुणों की चर्चा बिल्कुल नहीं फैलने देना चाहते थे। उन्हें काम से प्रेम था नाम से नहीं। यही कारण है कि हम अपने पाठकों को उनके बारे में अब तक कुछ नहीं बता सके।

बाबू चिन्तामणि घोष ईमानदारी और पुरुषार्थ को ही अपनी सबसे बड़ी पूँजी समझते थे। नशा बिलकुल नहीं करते थे, अपने वादे की पूरी पाबंदी करते थे। जिस काम को वे शुरू कर देते थे वह चाहे जैसा कठिन हो बिना उसको पूरा किये चैन नहीं लेते थे। यदि हम बाबू चिन्तामणि घोष को अपना आदर्श बना कर काम करें तो यह हो नहीं सकता कि हम जिस काम में हाथ लगावें वह पूरा न हो।

बाल-विनय

तुमसे यही विनय भगवान॥
पढ़ने से हम जी न चुरावें, रखें पाठ का ध्यान।
करें खूब व्यायाम नित्य-प्रति होवें अति बलवान॥
बड़े जनों का मान करें हम, तज दें ईर्ष्या मान।
नित्य "निरंजन" को ध्यावें हम, भारत की सन्तान।

निरंजनप्रसाद शर्मा "नव"

तितली

देखो देखो आई तितली।
रूप मनोहर लाई तितली॥
है यह अति सुन्दर सुकुमारी।
आँखों को लगती है प्यारी॥
इसके पंख बड़े चमकीले।
जिन पर बूटे जड़े रँगीले॥
नीली-पीली औ है काली।
तरह तरह के रंगोंवाली॥
दोनों आँखें गोलमटोल।
जिन पर पड़ा है नीला झोल॥
चारों ओर है चक्कर देती।
सुन्दर फूलों का रस लेती॥
यदि तुम चाहो पकड़ा इसको।
झट उड़ जाएगी ऊपर को॥
मुझको है अति प्यारी तितली।
आ जा मेरी न्यारी तितली॥

सुशील कुमारीदेवी
(आयु १३ वर्ष)

लुका-छिपी

लुका-छिपी का खेल घर की दीवारों के अन्दर ही नहीं, दुनिया के छोटे बड़े जीवों में भी होता है। घास, फूल, पत्ती, छाल, मिट्टी, पत्थर सभी इसमें थोड़ा बहुत भाग लेते हैं।

कीड़ा कहाँ है ?

जीवों के शरीर पर अनेक तरह का रंग देखा जाता है। उसी के सहारे हर एक जीव अपने को छिपा लेता है। शेर जैसे स्थान में रहता है, वैसा ही उसके शरीर का रंग भी देखने में आता है। छोटे-छोटे जीवों का रंग भी वहीं के घास-फूस, बालू-मिट्टी-पत्थर की तरह होता है। नहीं तो वे किस तरह शेर से बच सकें। बर्फ़ीले देशों के जानवर अक्सर सफ़ेद रंग के होते हैं। रात में निकलने वाले सियार, उल्लू, चमगादड़ वग़ैरह अन्धकार से मिलते जुलते रंग के होते हैं।

इसके अलावा सभी जीव अपने रंग-रूपवाले पदार्थों में छिपने की कोशिश करते हैं। जहाँ एकाएक उनकी पहचान करना मुश्किल है। सुमात्रा, बोर्नियो

आदि टापुओं में एक बन्दर होता है। वह ज़रा-सा खटका होने पर गुड़ीमुड़ी हो कर पेड़ की डाल में लटक जाता है। फिर यह नहीं मालूम पड़ता कि बन्दर है या बड़ा सा फल, क्योंकि वह अक्सर उन्हीं पेड़ों पर रहता है जिनमें बड़े-बड़े भूरे रंग के फल लगते हैं।

तोते का रंग उसके रहने के स्थान—पीपल आदि की हरी टहनियों की तरह होता है। गौरइया, श्यामा आदि का रंग, उनके रहने के स्थान खर-फूस, सूखे पेड़के खोखलों की तरह ही होता है।

बन्दर है या फल ?

कीड़े-मकोड़े अन्य चीज़ों की आड़ में अपनी रक्षा का उपाय करते हैं। कुछ सूखे फूस, कुछ हरी घास, कुछ पके हुए पत्ते और कुछ दूसरे डंकवाले ज़हरीले कीड़े का आकार धारण करके बच जाते हैं। पत्ती चाटनेवाला कीड़ा पत्ती में ऐसा छिप जाता है कि उसे जल्दी कोई पहचान ही नहीं सकता। मादा को अंडे सेना पड़ता है, इसलिए वह तो बिलकुल पत्ती की ही तरह होती है। अमरूद पर रहनेवाला कोड़ा ठीक उस पेड़ की गाँठों की तरह ही होता है। गोजर-बिच्छू पुराने बाँस और नरकुल की जड़ों की तरह होते हैं, और वे रहते भी अक्सर ऐसी ही जगह हैं। टिड्डे, झींगुर, और आँखफोड़े का रंग, उनके
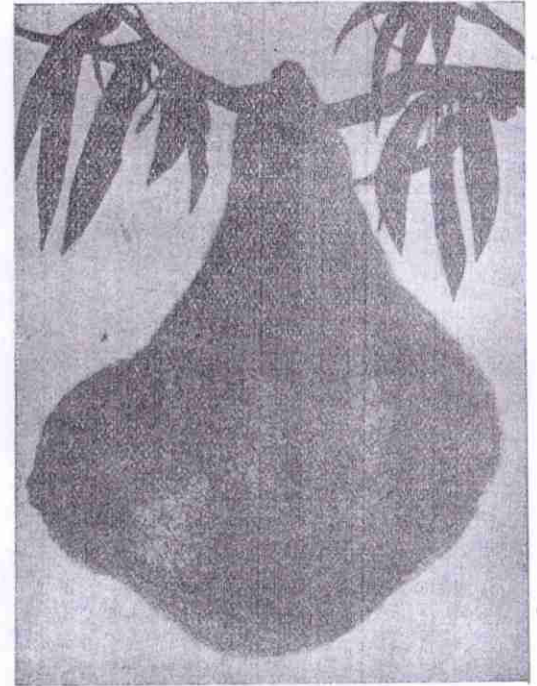
रहने के स्थान, धान या तिल के पौधों की तरह ही होता है। लाख का कीड़ा लाख की तरह लाल रंग का होता है। दुश्मनों को डराने के लिए तितली साँप के फन का आकार बना करके चिपटी रहती है। इससे सहज में कोई जीव उसके पास नहीं आता। तितली के पंख विचित्र रंग के इसी लिए होते हैं कि वह बहुत तरह के फूलों में आसानी से छिप जाय। तितली के ऊपर के पंख हरियाली के निचले भाग की भाँति नीले-पीले रंग के होते हैं। वह विश्राम हरियाली में ही करती है। पर उड़ने के समय उसके साफ़ नीले पंख निर्मल आकाश के नीचे छिप जाते हैं। जब फूल पर बैठती है तो उसे देख कर फूल का ही भ्रम होता है।

कौन सी पत्तियां हैं कौन सी तितलियां ?
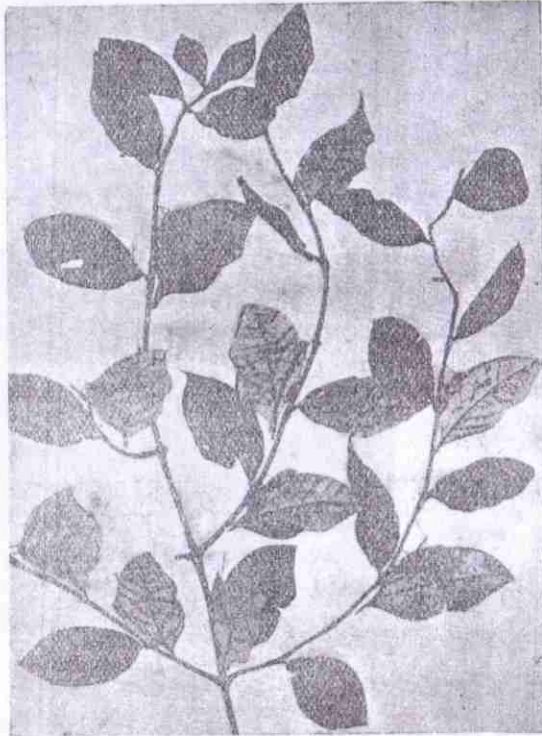
गोह, मगर, घड़ियाल आदि जीवों के शरीर जल में पड़े हुए वृक्ष, पत्थर या मिट्टी के टीले की तरह ही होते हैं। लाल मछली मूँगे के पगारों में छिप कर मज़े से रहती है। घोंघे, छिपकली और गिरगट तो अपने से बड़े जीवों का रूप धारण करके शत्रुओं को डरा देते हैं।

मोर सघन वन में रहता है। हरे हरे पेड़ों में पड़ती हुई सूर्य की किरणों में वह अपने आपको बिलकुल छिपा लेता है। भेड़िये का शरीर वन की धूप-छाँह से

[illegible] मिलता है। तथा ख़रगोश आकाश के रंग में एक हो जाता है। अर्थात् [illegible]चरों का रंग जल की तरह, नभचरों का आकाश की तरह, तथा दोनों जगह [illegible]वाले जीवों का जल-स्थल से कुछ न कुछ मिलता रहता है। उनके इन [illegible] में धूप-छाँह की झलक और [illegible] सहायता पहुँचाती है। वन में [illegible] हुए हिरन को, पत्ती में [illegible] हुए कीड़े को, फूल पर बैठी [illegible] तितली को, जल के बीच टीले [illegible] पड़े हुए मगर को, तथा पीपल [illegible] चहकते हुए तोते को इसीलिए
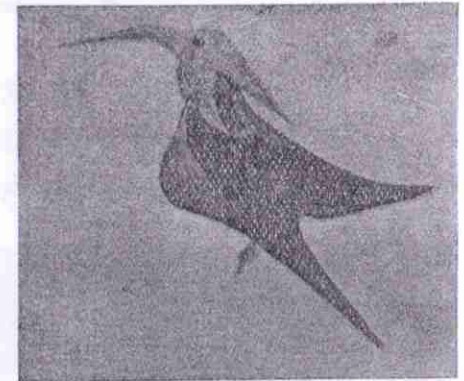
फूल है या तोता ?

यह कौन जानवर है ?

हम एकाएक नहीं देख पाते। अगर इस तरह की लुका-छिपी जीवों में न रहे, तो सृष्टि का नाश बहुत जल्दी हो जावे। बड़े-बड़े ताक़तवर जीव छोटे जीवों को बिना परिश्रम पकड़ कर खा जायँ। जिस तरह छोटे छोटे लड़के और लड़कियाँ [illegible]-छिपी में बड़े और ताक़तवर लड़कों को तंग कर डालते हैं, उसी तरह [illegible] दुनिया में दिन-रात छोटे छोटे कमज़ोर जानवर बड़े बड़े जानवरों के पैर [illegible] बैठे हुए भी, उनकी आँखों में धूल झोंका करते हैं।
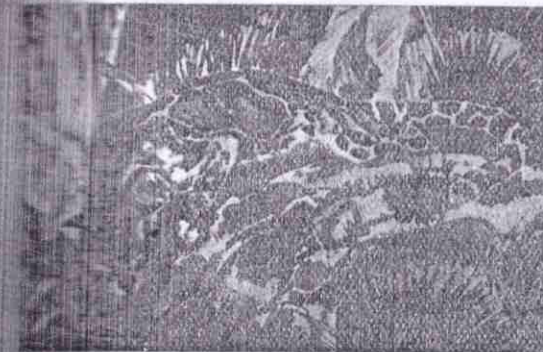
शम्भूदयाल सक्सेना, "साहित्य-रत्न"

पिल्ला बिल्ला और चिबिल्ला

पिल्ला बिल्ला चलते घर से किन्तु न जाते कभी मदरसे।
और चिबिल्ला को सँग लेकर पेड़ों पर चढ़ते बन्दर-से ॥
बढ़ी मास्टर की हैरानी लख तीनों की यह शैतानी।
बिगड़ इसी से उसने उनको सजा कड़ी देने की ठानी ॥
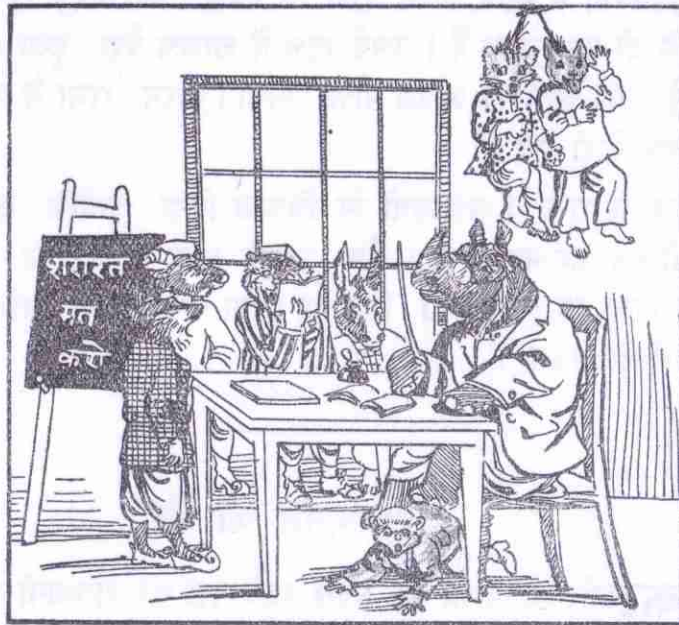
पिल्ला बिल्ला की चोटी धर बाँधा खूब एक में कस कर।
जोड़ी-सा तबले की फ़ौरन लटकाया उनको खूँटी पर ॥
बचा चिबिल्ला एक अकेला उसे मेज़ के नीचे ठेला।
और दबा दोनों पैरों से कहा—"दुष्ट क्यों करता खेला ॥"
कुत्ता-सा मुँह वाला पिल्ला बिल्ली-सा मुँह वाला बिल्ला।
हाय मरा रे हाय मरा रे करता नीचे शोर चिबिल्ला ॥

कठिन चिबिल्ला ने छुटकारा समझा तो यह बात बिचारा।
यदि सो जायें ज़रा गुरुजी छिन में काम बना लूँ सारा ॥
लगा बड़ी गुरु-भक्ति दिखाने औ अति उनके पाँव दबाने।
मिटी थकान क्रोध सब उतरा बहुत मास्टरजी अलसाने ॥

गहरी नींद लगे सोने जब उठा चिबिल्ला नीचे से तब।
चढ़ा मेज़ पर लेकर कैंची देख लगे लड़के हँसने सब ॥
बँधी चोटियों को कतरा झट पिल्ला बिल्ला गिरे पटा पट।
चौंके गुरुजी उलटी कुर्सी हड्डी टूटी नींद गई हट ॥
बोले—लड़को हमें बचाओ इन तीनों को मार भगाओ।
सचमुच है या सपना है यह पहले यही बात बतलाओ ॥

———

सच बोलनेवाला डाकू

बहुत दिनों की बात है, हिन्दुस्तान में एक बहुत ग़रीब आदमी रहता था। जब उसे बहुत तकलीफ़ होने लगी तो उसने डाका मारना शुरू कर दिया। लेकिन उसे अपने जीवन से सन्तोष नहीं हुआ। इससे वह एक फ़क़ीर से सलाह लेने गया।

फ़क़ीर ने कहा—"झूठ बोलना छोड़ दो, हमेशा सच बोलो। बस तुम्हें किसी बात की तकलीफ़ न होगी।"

डाकू बोला—"पर मैंने बहुत बहुत से पाप किये हैं, उनका क्या होगा।"

फ़क़ीर ने जवाब दिया—"बेटा, हमेशा सच बोलो और किसी बात की चिन्ता मत करो।"

डाकू हमेशा सच बोलने का वादा करके चला गया।

इसके कुछ दिनों बाद एक रात वह राजा के घर में चोरी करने चला। राजा भी वेष बदल कर इधर-उधर फिर रहा था। रास्ते में दोनों की भेंट हो गई और वे आपस में बातें करने लगे। राजा ने पूछा—"तुम कहाँ जा रहे हो?"

डाकू झूठ नहीं बोल सकता था इसलिए उसने जवाब दिया—"राजा के महल में हीरे और मोती चुराने जा रहा हूँ।"

राजा बोला—"हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।"

इस पर दोनों साथ साथ चलने लगे और यह तय किया कि जो कुछ चुरावेंगे उसे आपस में आधा-आधा बाँट लेंगे। राजमहल के पास पहुँचने पर डाकू अन्दर घुसा और राजा बाहर खड़ा रहा।

बड़ी मुश्किल से डाकू ने एक सन्दूक़ खोला। उसमें तीन रत्न-हार रक्खे थे। एक हार उसने सन्दूक़ में ही रहने दिया और दो लेकर बाहर चला आया।

और एक हार राजा को देकर बोला—"वहाँ तीन हार रक्खे थे, पर मैं दो ही लाया हूँ ताकि बाँटने में झगड़ा न हो।"

दूसरे दिन राजा ने अपने ख़ज़ानची को बुलवाकर कहा—"जान पड़ता है रत्नों का सन्दूक़ खुल गया है। देखो सब चोरी चला गया या कुछ बचा।"

ख़ज़ानची ने भीतर जाकर देखा कि रत्नहारों का सन्दूक़ खुला पड़ा है और उसमें से दो हार ग़ायब हैं। उसके दिल में लालच पैदा हुआ। उसने तीसरा हार भी ग़ायब करने का अच्छा मौक़ा पाया। फ़ौरन राजा से जाकर बोला—"सब हार चोरी गये।"

इस पर राजा ने ख़ज़ानची को निकाल दिया क्योंकि झूठा होने से वह कोई भी पाप कर सकता था। और उसकी जगह पर डाकू को ख़ज़ानची बनाया क्योंकि राजा का ख़याल था कि वह हमेशा सच बोलेगा इसलिए उससे कोई पाप नहीं हो सकता।

काश्मीर की सैर

काश्मीर आनेवालों को सबसे पहले यहाँ की राजधानी श्रीनगर में आना पड़ता है। हम लोग भी यहीं आये। हमारे लिए एक हाउसबोट पहले से ठीक किया हुआ था। उसी में हम लोग ठहरे। हाउसबोट अँगरेज़ी शब्द है इसका अर्थ है नौका-गृह। यहाँ आनेवाले अधिकांश यात्री इन्हीं नौकाओं में ठहरते हैं। ये नावें क्या हैं पूरे घर के घर हैं। सोने के लिए अलग कमरे, खाने पीने, उठने बैठने के लिए अलग कमरे। रसोई के लिए एक छोटी नाव साथ रहती है जिसे 'कुक-बोट' कहते हैं। पार आने जाने के लिए, नदी में सैर करने के लिए एक छोटा सा डोंगा भी रहता है जिसे यहाँ की भाषा में 'शिकारा' कहते हैं।

हमारे बोट का नाम 'पोप्युलर' है। बोट बड़ा सुन्दर है। काश्मीर का लकड़ी का काम बड़ा सुन्दर होता है। बढ़िया बेल-बूटे-दार लकड़ी की दीवालें हैं। कुरसी, टेबल, पलँग, गलीचे सभी आराम की चीज़ें इनमें रहती हैं। काश्मीर का यह जलमय जीवन एक प्रकार से नया है और यहाँ आनेवालों को इसका आनन्द अवश्य लेना चाहिए।
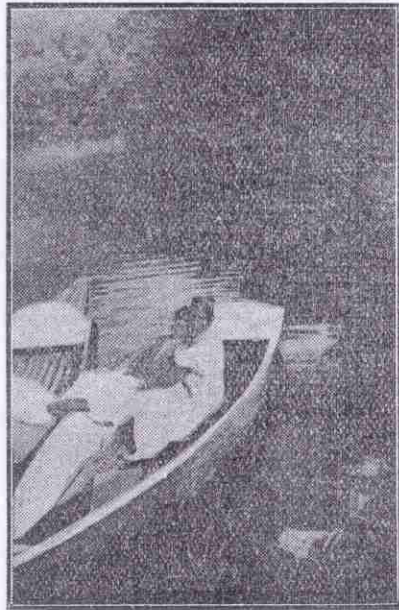
शिकारे में

यों तो नावों के ये घर श्रीनगर में झेलम नदी में अथवा डल झील में खड़े रहते हैं परन्तु इन्हें इधर-उधर लेजा भी सकते हैं। श्रीनगर से ११ मील दूर गंधरबल में क्षीरभवानी का एक मेला था। मेला देखने तथा ५-६ दिन रहने के लिए बोट को हम लोग वहाँ ले गये थे। सैकड़ों कमरेवाले बड़े बड़े जहाज़ों को बम्बई के समुद्र-तट पर आते जाते मैं कई बार देख चुका हूँ तो भी इस बोट को नदी में धीरे धीरे चलते देखकर मुझे एक नई बात मालूम हुई। १०-१५ मल्लाह बड़ी बड़ी बल्लियाँ लेकर या पीर! दस्तगीर! करते हुए सारे शरीर का ज़ोर लगाकर बोट को खेते चले जाते हैं। मैं अपने कमरे में बैठा लिख रहा था, पढ़ रहा था, छत पर घूम रहा था और घर का घर बहा चला जा रहा था। क्या यह बात कम कौतूहल की है?

हमारी काश्मीर-यात्रा का अधिकांश समय श्रीनगर में ही बीता है। श्रीनगर शहर तो बहुत गंदा है। शहर की गलियों में जाने को जी नहीं करता,

[illegible]न्तु शहर के बीच में बहती हुई झेलम में शिकारे पर बैठकर शहर की शोभा
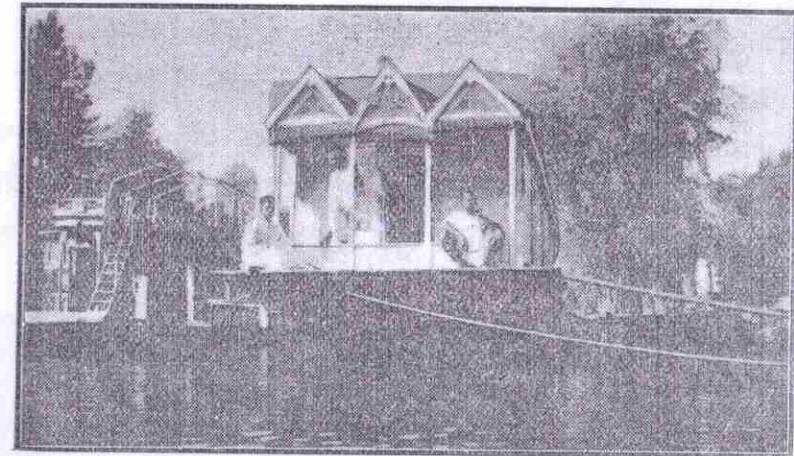
हमारा हाउस बोट

[illegible]खने में अच्छा आनन्द आता है। बीच में एक जगह नदी के किनारे राज-

निशात बाग
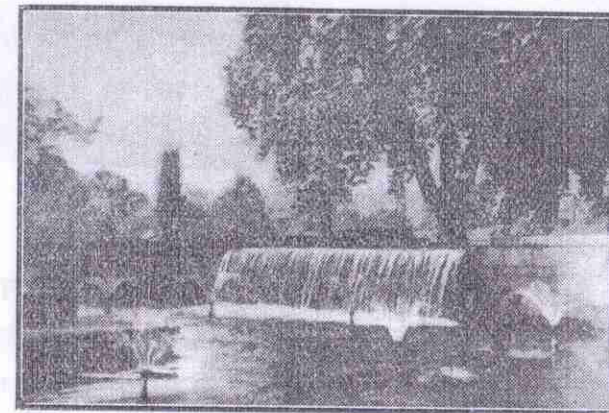
[illegible] भी है। नदी पर सात पुल हैं। पुल को यहाँ 'कदल' कहते हैं। अमीरा-

कदल पहला पुल है। यहीं से शहर का वह भाग शुरू होता है जो साफ़-सुथरा है, बड़े शहरों की तरह बसा है।

श्रीनगर के थोड़ी थोड़ी दूर पर तीन बाग़ मुग़लों के ज़माने के हैं। निषात और शालमार-बाग़ बहुत ही सुन्दर हैं। चश्मेशाही भी पुराना बग़ीचा है पर छोटा है। यहाँ के चश्मे का पानी बहुत ही गुणकारी है। निषात और शालमार बाग़ों में रविवार को ख़ासी भीड़ रहती है। उसी दिन यहाँ के फ़व्वारे
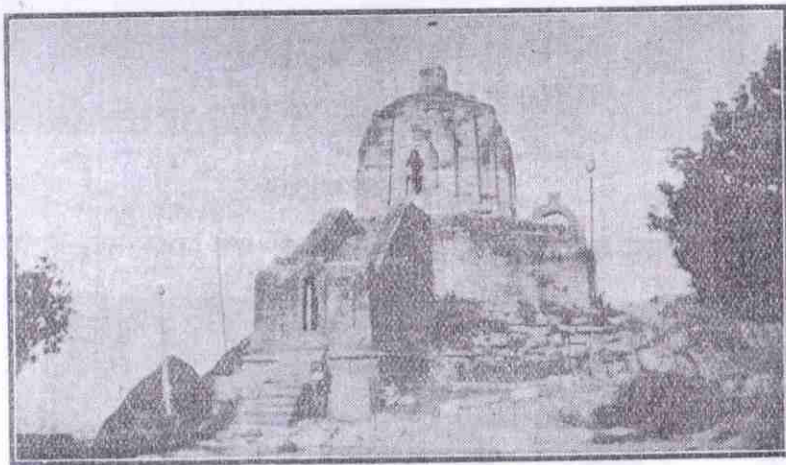
शङ्कर का मन्दिर

चलते हैं। दोनों बग़ीचों में नाले का पानी जगह जगह से इस तरह गिराया गया है कि उनका दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम होता है। बग़ीचों में भाँति भाँति के वृक्ष लगे हैं। काश्मीर में जहाँ जंगल भी फूलों से भरे पड़े हैं तो इन बाग़-बग़ीचों में फूलों का क्या कहना ? गुलाब का तो मैंने यहाँ पेड़ देखा, फूलों के बोझ से वह इतना दबा जा रहा था कि उसे लकड़ी के चौखटे का सहारा देना पड़ा !

ऐसे ही छोटे छोटे बाग़ श्रीनगर से ३० मील की दूरी पर अनन्तनाग तथा अछैबल में भी हैं। श्रीनगर शहर में चिनारबाग़ के समीप ही, जहाँ हमारा बोट था, एक पहाड़ी है। उस पर शंकर का एक मन्दिर है। शंकराचार्यजी ने इसे बनवाया था इसलिए इस स्थान का नाम शंकराचार्य पड़ गया है। पहाड़ी पर चढ़ने से दूर तक फैला हुआ श्रीनगर शहर, चारों ओर के पहाड़ और साँप की तरह बल खाती हुई झेलम के दृश्य बड़े ही सुन्दर दिखाई देते हैं। शहर के दूसरी ओर हरिपर्वत पर अकबर का बनाया हुआ एक क़िला भी है।

लेखक घोड़े पर

श्रीनगर से हम लोग पहलगाँव गये जो वहाँ से ६० मील दूर है। नदी, नाले और जङ्गल के अद्भुत दृश्य यहाँ देखने को मिलते हैं पर सबसे अधिक आनन्द तो मुझे उस दिन आया जब हम घोड़ों पर चढ़कर पहलगाँव से ७ मील दूर चन्दनवाड़ी गये। पहाड़ के बीच में एक छोटा-सा ऊँचा-नीचा पथरीला रास्ता गया है। यहाँ के पहाड़ी घोड़े बड़े होशियार होते हैं। बड़ी ख़ूबी से मैं इस रास्ते को तय करता चला जा रहा था। पहाड़ की चोटी पर से फिसलकर बहुत दूर तक रास्ते में पड़ी हुई बरफ़ को हमें पार करना पड़ा। पहाड़ की तलहटी में उस बरफ़ को काटकर नदी
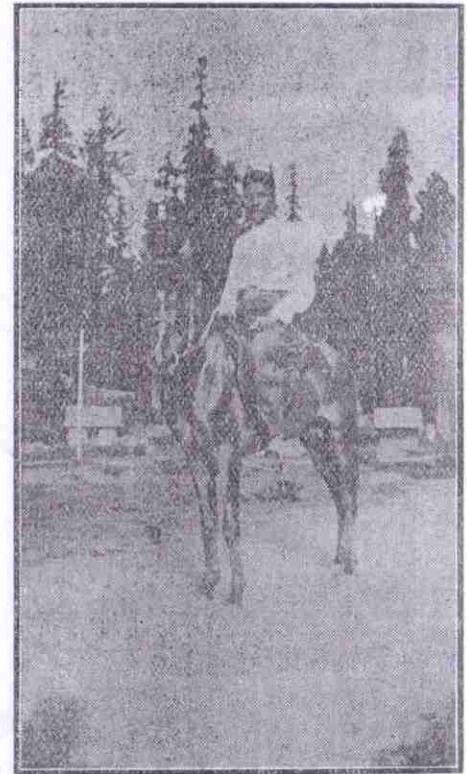
बहती है। पहाड़ी और रेतोले रास्ते में नदी को बहते तो आपमें से बहुते
ने देखा होगा पर बरफ़ में से बहती हुई नदी की कल्पना तो करें ! इस
रास्ते में हमें बरफ़ का पुल भी मिला। नीचे नाला बह रहा था ऊपर
प्रकृति ने बरफ़ का पुल बाँध दिया था !
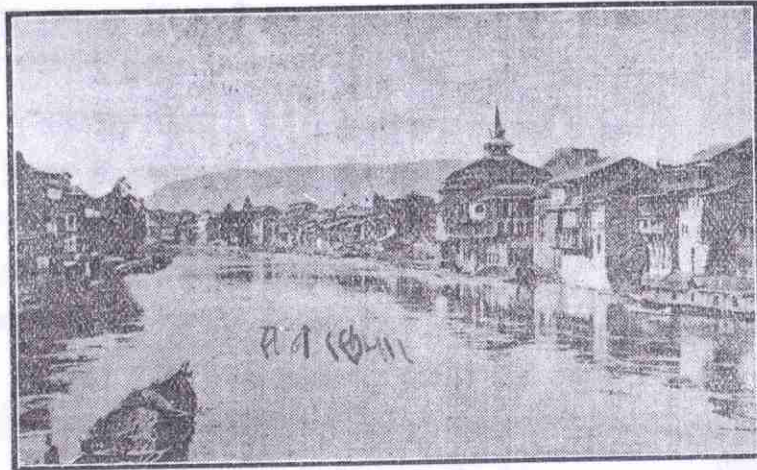
श्रीनगर

बरफ़ का जो आनन्द चन्दनवाड़ी के रास्ते में मिला उससे भी अधि
खिलनमर्ग में मिला था। खिलनमर्ग श्रीनगर के उस तरफ़ की घाटी में ३
मील दूर है। रास्ते में पहाड़ की समतल भूमि पर गुलमर्ग बसा है। वहाँ भा
से कोठियाँ मिलती हैं। खिलनमर्ग गुलमर्ग से ३ मील है। पहाड़ की सी
चढ़ाई है पर घोड़े बड़ी सरलता से चढ़ जाते हैं। खिलनमर्ग पहुँच कर पहाड़
बर्फ़ीली चोटियों के समीप हम लोग पहुँच गये। बहुत दूर तक बरफ़ का मैदा
था। आप सुनकर आश्चर्य करेंगे कि हम लोग उस बरफ़ पर खेले, कूदे, ले
बरफ़ की गेंद बना बनाकर हम लोगों ने एक दूसरे की पीठ से बात की ! बर

का यह आनन्द निराला था। शहर में बरफ़ बेचनेवाले को पैसा देने पर बरफ़ मिलती है परन्तु यहाँ तो ईश्वर की दी हुई इतनी बरफ़ पड़ी है।

काश्मीर के ऐसे सुन्दर सुन्दर स्थानों की, बाग़-बग़ीचों की, नदी-नालों की और ख़ासकर बरफ़ के पहाड़ों की शोभा देखकर जी कहता है कि हमेशा यहीं बने रहें।

घनश्यामदास पोद्दार

केला

मेरे दरवाज़े पर केला, लगा रहा है फल का मेला।
खाकर जिन्हें ऊब हम जाते, तरकारी भी ख़ूब बनाते ॥
कहीं नहीं हम शाखें पाते, हरे हरे पत्ते दिखलाते।
लम्बे चौड़े मन हर लेते, काम थालियों का हैं देते ॥
कँकड़ीली भू में रह सकता, बाधायें सब है सह सकता।
ऊसर को उपजाऊ करता, अपनी उर्वरता से भरता ॥
केवल एक बार फलता है, फिर पृथ्वी-तल पर ढलता है।
तब इसका कोंपल दिखलाता, जो बढ़कर नव छीमी लाता ॥
हाथी बड़ी ख़ुशी से खाता, इसको दाँतों पर उछलाता।
मुझ को है यह दृश्य सुहाता, सदा देखना मन को भाता ॥
धार्मिक उत्सव जब आता है, मंडप इससे छवि पाता है।
इसके बिना एक-दम ख़ाली, सारा उपवन शोभाशाली ॥

चन्द्रभानुसिंह

सुमेर अपने पिता के साथ घूमने को बग़ीचा आया। वहीं पर मैं बैठा था। सूर्य छिप चुका था और चाँद आसमान पर पूरा निकल आया था। ऐसे समय में जब कि पिता और पुत्र कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे अचानक सुमेर की नज़र चन्द्रमा की ओर जा पड़ी, और उसने बात काट कर अपने पिता से पूछा—"पिताजी उस चन्द्रमा की ओर देखो। वह कैसा सफेद है, परन्तु उसमें वे निशान क्यों दिखाई पड़ते हैं।

पिता—इस समय रात्रि हो रही है, हमको घर चलना चाहिए। इसकी बाबत फिर कभी पूछना।

पुत्र—नहीं पिताजी! अभी बतलाइए। अभी रात्रि नहीं हुई है।

पिता—ऐसी हठ करना ठीक नहीं। आज तो मैं तुम्हें बतलाये देता हूँ पर फिर ऐसी हठ मत करना। अच्छा सुनोः—

पहले समय में जब कि सृष्टि को बने हुए थोड़ा समय हुआ था, परियाँ ज़मीन पर रहा करती थीं, वे स्वर्ग तक भी जा सकती थीं।

एक समय एक परी खड़ी हुई संसार की शोभा का आनन्द लूट रही थी कि उसने एक बूढ़े को पास के रास्ते से जाते हुए देखा। उस परी ने देखा कि उस बूढ़े के बाल सफेद हो गये हैं, दाँतों का नाम निशान नहीं रहा, ज़रा सा हो गया है और सारा शरीर क्षीण होगया है यह देखकर उस परी को दया आगई और उसने बूढ़े को पुकारा। बूढ़ा पहले डर गया क्योंकि उसने सुन रक्खा था कि परियाँ मनुष्यों की कट्टर शत्रु हैं, पर उसकी मीठी बोली सुन कर वह उसके पास आगया। तब उस परी ने कहा—"महाशयजी क्या आपके घर में कोई नहीं है जो आप कष्ट उठा रहे हैं?" तब बूढ़े ने कहा कि "घर में मेरी स्त्री है जो मेरे समान बूढ़ी है।" फिर परी ने पूछा, "क्या आप स्वर्ग-लोक को जाना चाहते हैं"। बूढ़े ने उत्तर दिया, "भला दुनिया में ऐसा कौन होगा जो स्वर्ग न जाना चाहता हो; परन्तु मेरी एक कामना यह है कि मेरी स्त्री भी मेरे साथ जा सके।" तब परी ने उस बूढ़े मनुष्य को दो चावल देकर कहा, "तुम इन्हें ले जाकर बड़ी सावधानी से रखना और आज से ३० वें दिन छठे घंटे को एक मैदान में जाना वहाँ तुम आकाश की ओर ध्यान से देखना तो तुम्हें एक दरवाज़ा दिखाई पड़ेगा तब तुम एक दाना खा लेना और एक अपनी स्त्री को दे देना। बस फिर तुम स्वर्ग में पहुँच जाओगे। बूढ़े ने उस परी को धन्यवाद दिया और बहुत खुशी होता होता अपने घर आया तथा अपनी स्त्री से सब हाल कह सुनाया। अब तो दोनों के हर्ष का पारावार न रहा।

ख़ैर किसी तरह से वे दिन कटे और तीसवाँ दिन आ पहुँचा। और वे छठे घंटे में मैदान में जा पहुँचे। उन्हें आकाश में एक दरवाज़ा दिखाई पड़ा। उसे देखते ही बूढ़े ने वे दोनों चावल निकाले और एक दाना स्त्री को दे दिया। पर उस ने उतावली में अपना दाना खो दिया। इधर उसकी स्त्री सिंहासन पर चढ़ कर स्वर्ग-लोक पहुँच चुकी थी और यहाँ वे अपने चावल ढूँढ़ने में लगे थे। किसी तरह वह चावल बूढ़े के हाथ लगा और उसने वह खा लिया। इतने में एक दूसरा सिंहासन उतरा और वह बूढ़े को बिठाकर स्वर्ग-लोक के फाटक तक पहुँच करके ग़ायब हो गया। परन्तु यहाँ फाटक बंद हो चुका था। "का

वषो जब कृषी सुखाने"। अब बूढ़ा फूट फूट कर रोने लगा और भाग्य को दोष देने लगा।

बहुत दिनों के पीछे एक परी ने भीतर से कहा कि "ऐ मूर्ख मनुष्य! अब क्यों रो रहा है। अब दरवाज़ा नहीं खुल सकता। लेकिन तू चन्द्रमा में चला जा वहाँ तू एक बर्फ़ के घर में रहना। तुझे वर्ष भर में एक दिन यहाँ पर आने मिलेगा"। उस बूढ़े को यह बात ठीक जँची और वह चन्द्रमा में रहने लगा।

वह घर यही धब्बा सा दिखाई देता है।

पुत्र—हाँ पिताजी! अब मुझे मालूम हो........

पिता—(बात काट कर) अब चलो चलें रात हो रही है।

ऐसे कहते हुए पिता और पुत्र अपने घर की ओर चल दिये। मैंने भी घर का रास्ता लिया।

उत्तमचन्द श्रीवास्तव
अवस्था ११ वर्ष

प्रातःकाल

पड़ी चमक तारों की मन्द,
कैसा फीका लगता चन्द,
मंद हवा देती आनन्द,
होगा सूर्य्य उदय तत्काल!
उठो, होगया प्रातःकाल ॥१॥

हुआ अँधेरे का अब नाश,
फैला चारों ओर प्रकाश,
देखो, पूरब में आकाश,
कैसा बना हुआ है लाल।
उठो, हो गया प्रातःकाल ॥२॥

पक्षी सुना रहे हैं बोल,
दिये द्वार सबने निज खोल,
पनिहारिन ले घैला, डोल,
जल को चली बजाती गाल।
उठो, हो गया प्रातःकाल ॥३॥

बैलों को ले चले किसान,
काँधे पर हल का सामान,
किया खेत की ओर पयान,
लेकर चले मजूर कुदाल।
उठो, हुआ अब प्रातःकाल ॥४॥

जगे लोग करते निज काम,
तुम भी अब छोड़ो आराम,
उठो, भजो श्री सीताराम,
'राघव' मत सोओ हे लाल!
उठो, हुआ अब प्रातःकाल ॥५॥

श्रीराघवप्रसादसिंह

अच्छी बनो

प्यारी बहिनो ! अपने किये दोष वा अपराध को मान लेना, मन और आत्मा को बलवान् बनाना है। जिनका मन कमज़ोर होता है आत्मा दुर्बल होती है; वे ही अपनी बुराई छिपाती देखी गई हैं। मैं इसे और साफ़ करने के लिए एक आँखों देखी बात लिखती हूँ जो इस प्रकार है:—

चार महीने से हमारे विद्यालय की बहिनें रोज़ शाम को अपने गुरुजी के साथ टहलने के लिए जाती हैं। चैत के महीने में जब चने के खेत पक रहे थे हम सब एक बाग़ में गये। लौटती बार खेत में से कुछ बहिनों ने चने के [illegible] तोड़ लिये। यह खेत उन बहिनों के एक रिश्तेदार की ही ज़मींदारी [illegible] था। गुरुजी ने ऐसी हरकतों के लिए पहले ही कड़ी ताक़ीद कर दी थी किन्तु ये बहिनें उस ताक़ीद को बिलकुल भूल गई थीं। गुरुजी कुछ पीछे रह गये [illegible] जिससे उनकी नज़र इन पर न पड़ सकी। अंत में जब इनके इस बुरे काम की ख़बर गुरुजी ने सुनी तो उन्हें हार्दिक दुःख हुआ और उन्होंने कहा—

"इसमें किसका दोष है ? दोष तो मेरा ही है क्योंकि मैं शिक्षक होकर भी अपनी सीख को इस प्रकार उनके मन में न उतार सका जिससे वह न भूली जा सके। इस कारण अपनी इस कमी का प्रायश्चित्त तो मुझे ही करना चाहिए।"

अंत में मेरे मना करने पर भी उन्होंने उस दिन रोटी न खाई। यह ख़बर सुनकर रात को उन बहिनों में खलबली मच गई और क्षमा माँगने तथा अपना अपराध स्वीकार कर लेने के पत्र अपने घर से गुरुजी को लिखकर भेजे। दयालुहृदय गुरुजी से क्षमा तो मिल ही जानी थी किन्तु इससे बहिनों को सन्तोष न हुआ। दूसरे दिन उन्होंने भी भूखे रहकर अपनी भूल का प्रायश्चित्त किया।

बाद में इसका फल आगे के लिए भी शुभ ही हुआ। इन बहिनों में से दो बहिनें कुछ दिनों के लिए बाहर चली गईं। वहाँ से एक बहिन ने अपने पत्र में लिखा—

"........हम सब और हमारे संगी साथी बाग़ देखने गये थे। वहाँ उन सबने फल फूल तोड़े किन्तु मुझे गुरुजी की बात याद आगई और मैंने कुछ नहीं लिया।"

महात्मा गाँधी का यह कहना कि अफ़्रीका में बैठा शिक्षक भारत में बैठे विद्यार्थी पर अपना असर डाल सकता है, सोलहो आने सही है किन्तु अच्छे बालकों, विद्यार्थियों का भी यह बड़ा भारी कर्तव्य है कि वे अपने माता-पिता और गुरुओं की बातें ध्यान से सुना करें और उनको सदा याद रक्खें। यदि अनजान में कोई अपराध हो जाय तो उसे निडरता के साथ मान लें और उस पर पछतावा करें जैसा कि उन बहिनों ने किया था तब ही उनकी बुराइयाँ दूर हो सकती हैं और वे अच्छे बालक कहे जा सकते हैं।

अम्बादेवी (साहित्य-सरस्वती)

———

मुन्नी की हैरानी !

मुन्नी बैठी गुड़ियाँ लेकर और लगी यह गाने गान ।
फ़ुर्सत पढ़ने की न मुझे है गुड़ियों से हूँ मैं हैरान ॥
इसी बीच में मुन्नू आया था वह तो भारी शैतान ।
बोला—यदि ऐसा है तो मैं काटूँगा इन सबके कान ॥

फ़ौरन उसे पकड़ मुन्नी ने कहा—"खड़ा रह ऐ अनजान ।
पहले मैं हैरान नहीं थी पर अब हूँ सचमुच हैरान ॥
ओ हो दे दे मेरी गुड़िया भैया मेरे कहना मान ।
समझ न उसको निरा खिलौना है उसके भी तन में जान ॥

स्वप्न क्यों होते हैं ?

शान्ता—दादा आज रात को मैंने स्वप्न देखा कि भाभी के लाला हुआ है, [illegible] चाहा कि सबके पहले दौड़ कर मैं ही आपको सूचना दूँ कि झट मेरी [illegible] खुल गई, देखा तो पलँगड़ी पर पड़ी हूँ और भाभीजी रामो को लिये [illegible]नी मसेहरी में सो रही हैं। सारी ख़ुशी काफ़ूर होगई। दादाजी यह स्वप्न [illegible] होते हैं ?

दादा—अभी तुम छोटी हो यह बात समझ में नहीं आवेगी। बड़ी होगी तो [illegible]ऊँगा।

शान्ता—नहीं दादाजी आप बताइए तो मैं समझने की कोशिश करूँगी। [illegible]नीजी तो कहा करती हैं कि शान्ता बड़ी समझदार है। जो बात सिखाओ [illegible] समझ लेती है।

दादा—हाँ ठीक है। तुम्हारा मन बढ़ाने को वह यह कहती है पर स्वप्न का [illegible] कठिन है। यह तुम अभी नहीं जानोगी।

शान्ता—नहीं दादाजी! मैं बड़ी व्याकुल रहूँगी जो आप मुझे नहीं बतायेंगे। [illegible] थोड़ा बहुत तो जान ही जाऊँगी।

दादा—अच्छा नहीं मानती तो सुनो। एकादशीवाले दिन तुम गंगा-स्नान [illegible] गई थीं। वहाँ क्या देखा ?

शान्ता—वहाँ गंगाजी में लहरें उठते देखी थीं! भाभीजी से पूछा तो [illegible]ने कहा कि ये लहरें वायु के वेग से बनती हैं। जब वायु अधिक होती है [illegible] [illegible]हरें अधिक होती हैं और जब वायु कम होती है तो कम लहरें उठती हैं।

दादा—हाँ ठीक है। इसी तरह हमारे मन में लहरें उठती हैं। मन जानती [illegible] ना ?

शान्ता—मन क्यों नहीं जानती। मन से ही तो सोचती-विचारती हूँ। जब किसी काम में मन नहीं लगता तो वह अच्छा नहीं बनता है।

दादा—जब मनुष्य सो जाता है तो मन धीरे धीरे शान्त हो जाता है। जैसे हवा से पानी हिलता है और उसमें लहरें उठती हैं वैसे ही हमारे मस्तक में मन के वेग से लहरें उठती हैं और तरह तरह के विचार पैदा होते हैं। काम करते करते मस्तक थक जाता है। तब नींद-सी मालूम होती है। जब नींद आना शुरू होती है तो मस्तक पर दबाव सा मालूम होता है। है न यही बात।

शान्ता—हाँ हाँ दादाजी—तब मन ढीला-सा पड़ जाता है।

दादा—हाँ यही बात है। जब गहिरी नींद आती है तो मन का काम बन्द हो जाता है पर मन बड़ा चञ्चल है। कभी कभी बीच में सोने पर भी यह चलायमान हो जाता है। बस तभी स्वप्न होते हैं। अधिकतर स्वप्न नींद आते समय और नींद पूरी हो जाने पर जब मस्तक आराम कर चुकता है होते हैं। है न ऐसा।

शान्ता—इस ओर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया।

दादा—अच्छा अब ध्यान देना। जैसे घंटे के बजने पर पीछे को झनकार सुनाई देती है वैसे ही मन नींद के दबाव पड़ने पर अपना थोड़ा थोड़ा काम करता रहता है। तभी स्वप्न होते हैं। जिस ओर मन के विचार अधिक रहते हैं वैसे ही स्वप्न दीख पड़ते हैं।

शान्ता—हाँ यह बात तो है।

दादा—स्वप्न मन के सच्चे विचारों को बताते हैं। इस ओर ध्यान देने से मनुष्य अपनी बुराई-भलाई सोच सकता है।

"बिल्ली को ख़्वाब में छिछड़े ही नज़र आते हैं"।

प्रेम-सखा

क्या तुम बुन सकती हो ?

एक लड़की ने अपनी गुड़िया के लिए ये कपड़े बुने हैं। इसमें मोजा, कुरता, टोपी आदि सभी चीज़ें हैं। यह सब ऊन की पोशाक हैं। शायद उसने जाड़े की ऋतु का अभी से इन्तिज़ाम किया है। तुम्हें भी अपनी गुड़ियों के
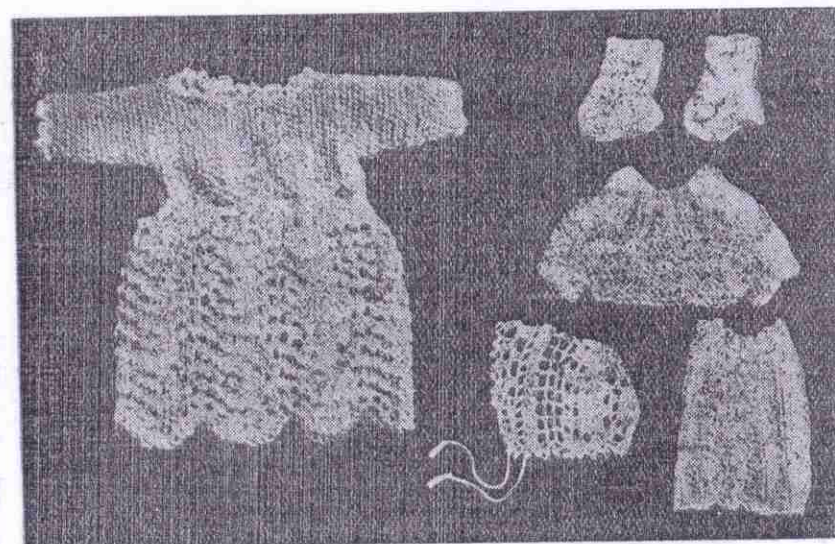
लिए अभी से कुछ पोशाक तैयार कर लेनी चाहिए। हमारा ख़याल है कि इस चित्र को देखकर अपनी गुड़ियों के लिए तुम भी ऐसी पोशाक तैयार कर लोगी।

१—गपेड़ी और सपेड़ी

किसी राजा के दरबार में दो मित्र पहुँचे। एक का नाम गपेड़ी था दूसरे का सपेड़ी।

राजा ने पूछा—"आप क्या चाहते हैं?" गपेड़ी ने उठ कर जवाब दिया—"महाराज मेरा नाम गपेड़ी है और इनका सपेड़ी, मैं गप करता हूँ और ये उसको सच बनाते हैं। इसी तरह हम लोग अपनी जीविका कमाते हैं। कल ही हम लोगों ने एक राजा को गप सुनाया था और आज इनाम पाकर चले आ रहे हैं। यह सुन राजा ने उन लोगों से गप करने को कहा।

गपेड़ी ने कहा—"राजा साहब हम लोग जब रास्ते में चले आ रहे थे तो देखा कि एक बकरी ताड़ का पत्ता खा रही है, जिसके दो पैर ज़मीन पर हैं और दो पैर ताड़ के वृक्ष पर।" राजा बहुत चकराया और सपेड़ी को सच बनाने की आज्ञा मिली। सपेड़ी ने कहा—"राजा साहब एक पुराना बिना पानी का कुआँ था उसी में एक ताड़ का वृक्ष जम गया। जिसका पत्ता ऊपर तक चला

आया था, बस! उसी के पत्ते को बकरी खा रही थी तो इसमें आश्चर्य करने की कौन सी बात है। यह सुन राजा ने और गप सुनाने को कहा—

गपेड़ी बोला—"महाराज मैंने एक मनुष्य को लम्बे बाँस से बैंगन तोड़ते देखा है। इस पर राजा और भी चकराये कि बैंगन तोड़ने के लिए भला लम्बे बाँस की क्या ज़रूरत है? इस बार भी सपेड़ी को सच बनाने के लिए कहा गया। सपेड़ी ने कहा—"राजा साहब एक पुराना मिट्टी का घर था, जो बरसात में ढह गया था और एक टीला सा बन गया था उसी पर एक बैंगन का पेड़ उगा। कुछ दिन के बाद उसमें फल लगे। उन्हीं को एक आदमी बाँस से तोड़ रहा था, इसमें तो ज़रा भी आश्चर्य नहीं है। गपेड़ी और सपेड़ी वहाँ से भी इनाम पाकर चलते बने।

शिवप्रसाद मिश्र

२—नहाने की कल

यह नहाने की अजीब कल बनी है। इसके नीचे बैठ जाइए और जिस चीज़ से नहाने की इच्छा हो उसका बटन दबाइए। गरम पानी, ठंडा पानी, साबुन, सोडा जो आप चाहेंगे वही आपके ऊपर गिरने लगेगा।
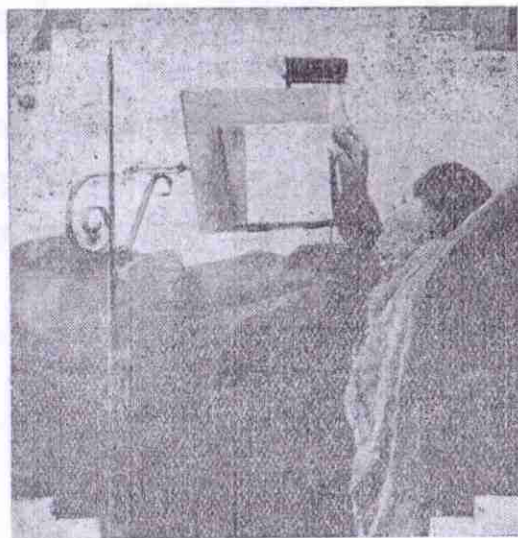
३—काहिलों का पढ़ना

ज़रा काहिल महाशय को देखिए कैसा लेटे लेटे पढ़ रहे हैं। आपही के भाई बन्दों के आराम के लिए एक कारीगर ने यह पुस्तक पकड़ने का यंत्र बनाया है। यह यंत्र आपकी इच्छानुसार किताब खोलता है और पन्नों को पकड़े भी रहता है।

४—गन्नेचोर ब्राह्मण की कहानी

किसी गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह रोज़ सबेरे एक जाट के गन्ने के खेत में जाकर कहता था—"जाट भाई तुम्हारे खेत से ग़रीब ब्राह्मण दो चार गन्ने ले ले।" फिर आप ही जाट की तरफ़ से यह कह कर कि ले ले भाई ले ले। दो चार गन्ने तोड़ ले जाया करता था। इस तरह करते करते दस बीस दिन में खेत का एक कोना खाली हो गया।

एक दिन जाट जब उस कोने की तरफ़ गया तो वह बड़े अचम्भे में पड़ गया और सोचने लगा कि दिन भर तो किसी को खेत की तरफ़ आने की मजाल नहीं। यह कौन है जो रात रात में गन्ने चुरा कर ले जाता है। इस बात को जाँचने के लिए उसने रात भर जागने का इरादा किया। जब थोड़ी सी रात रह गई तो उसके कान में यह आवाज़ आई कि "जाट भाई तुम्हारे खेत

से ग़रीब ब्राह्मण दो चार गन्ने ले ले?।" "ले ले भाई! ले ले।" इसके साथ ही गन्ने उखाड़ने की तड़ तड़ आवाज़ आई। जाट अपनी ओर से निकल कर हौले हौले उस कोने की तरफ़ आकर जल्दी से ब्राह्मण की चोटी पकड़ कर अपने कुएँ की तरफ़ ले गया। वहाँ कुएँ के पास एक बहुत गहरा पानी का गढ़ा बना हुआ था। अत्यंत सर्दी का मौसम होने से उसका पानी बर्फ़ की तरह ठंडा था। जाट ने कहा—"ब्राह्मण देवता तुमको दो चार गोते दे लूँ।" इसके जवाब में आपही कह कर "दे लो भाई दे लो" उसने धोती और कुरते समेत ब्राह्मण देवता को गड्ढे में गिरा दिया। बेचारा ठंढ से अकड़ गया। गिड़गिड़ाता हुआ बोला—"अब जाट भाई क्षमा करो। मैं अब कभी आपके खेत की तरफ़ नहीं आऊँगा।" यह सुन कर जाट को ब्राह्मण देवता पर दया आगई और उसने छोड़ दिया पर कहा—"भैया याद रक्खो सौ दिन चोर का एक दिन साह का"।

कुमारी सुशीलादेवी
बधावन

१—भूगोल

मास्टर—भूगोल किस विद्या को कहते हैं ?

लड़का—जिस विद्या से ज़मीन गोल की जाती है।

मास्टर—मसलन ?

लड़का—जैसे कुम्हार का चाक। यह ज़मीन यानी मिट्टी को गोल करके वर्तन बनाता है।

२—पाठशाला

मास्टर—पाठशाला किसे कहते हैं ?

लड़का—मन्दिर को कहते हैं।

मास्टर—क्यों ?

लड़का—वहाँ पर ब्राह्मण जल्दी जल्दी पाठ किया करते हैं।

३—ब्लैक बोर्ड

मास्टर—ब्लैक बोर्ड किसे कहते हैं ?

लड़का—जिसमें काले लड़कों का प्रबंध होता है।

मास्टर—कैसे ?

लड़का—जैसे जिसमें ज़िले की मामूली बातों का प्रबन्ध हो। उसे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कहते हैं, जिसमें शहर की सफ़ाई व रोशनी का प्रबंध हो उसे म्युनिसिपल बोर्ड कहते हैं।

४—ज्योमेट्री

मास्टर—ज्योमेट्री किसे कहते हैं ?

लड़का—एक प्रकार के पेड़ का नाम है।

५—इतिहास

मास्टर—इतिहास किसे कहते हैं ?

लड़का—जिसे देख कर हास (हँसी) इति (बन्द) हो जाय।

मास्टर—कोई उदाहरण दे सकते हो ?

लड़का—आपका बेंत।

६—ड्राइङ्ग

मास्टर—ड्राइङ्ग किसे कहते हैं ?

लड़का—विदेशी व्यापार को।

मास्टर—क्यों ?

लड़का—यह सब धन खींच ले जाता है।

७—व्याकरण

मास्टर—व्याकरण क्या वस्तु है ?

लड़का—किसी लड़के का नाम होगा।

मास्टर—क्योंकर कहते हो ?

लड़का—जैसे सूर्यकरण, चाँदकरण ऐसे ही व्याकरण।

नन्दन बी० ए०

———
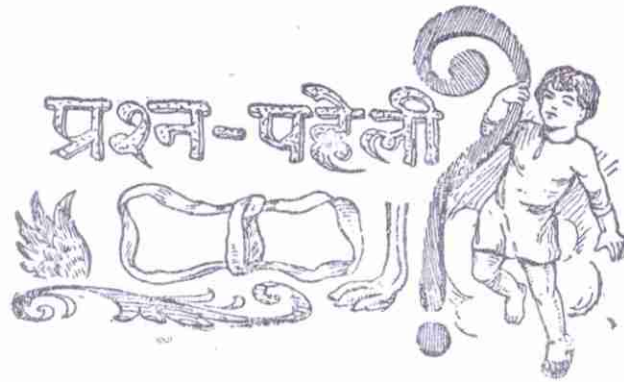
(१)

तन झँझरी सा सिर पर चादर,
घर में घर बनवाती हूँ।
पेट हमेशा मेरा ख़ाली,
रोज़ आदमी खाती हूँ॥

श्रीमती पारुल बाला, बैनर्जी

(२)

बरी रहूँ धड़ के बिना करी बनूँ सिर हीन।
पैर कटे से बक बनूँ अक्षर केवल तीन॥

कुञ्जबिहारी, अग्रवाल

(३)

एक लड़के ने अपने बाप को चिट्ठी लिखकर भेजी। सब शब्द एक ही सा[थ] लिखे हैं। बेचारे बापजी नहीं पढ़ सकते। बालको ज़रा तुम तो पढ़ो :—

"पूज्यवरपिताजीआपकीचिट्ठीमिलीमैंअभीघरनहींआसकतागुरुजीकहतेहैंकिइ[म्त]हानकरीबहैघरजाओगेतोपासनहोसकोगेमाँसेकहिएमेरीबहुतयादनकरेंइम्तहानकेबाद [ज]ल्दीहीघरआऊँगाआपकारामगोपाल।"

(४)

१	९	२
३	८	४
५	७	६

एक से लेकर ९ तक के अङ्क ऊपर के ख़ानों में इस तरह रखे हैं कि [बी]च के ख़ानों के अङ्कों से जो संख्या बनती है वह ऊपर के ख़ानों के अङ्कों [से] बनी संख्या से दूनी है। और नीचे के ख़ानों में जो संख्या बनती है वह [ऊ]पर की संख्या से तिगुनी है। एक से लेकर ९ तक की इन्हीं गिनतियों को [ब]दल बदल कर चार बार इस तरह रख सकते हैं कि बीच के ख़ानों की संख्या [दू]नी और नीचे के ख़ानों की तिगुनी बनी रहे। एक तरीक़ा हमने बता दिया। [बा]क़ी तीन तरीक़े तुम बताओ।

नोट—(क) जिनके चार जवाब ठीक होंगे उनमें से प्रथम दो को इनाम मिलेगा।
(ख) जिनके तीन जवाब तक ठीक होंगे उनका नाम प्रकाशित किया जायगा।
(ग) जिनकी लिखावट साफ़ न होगी उनके जवाब पर विचार न किया जायगा।
जवाब भेजने का पता—सम्पादक 'बाल-सखा', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

———
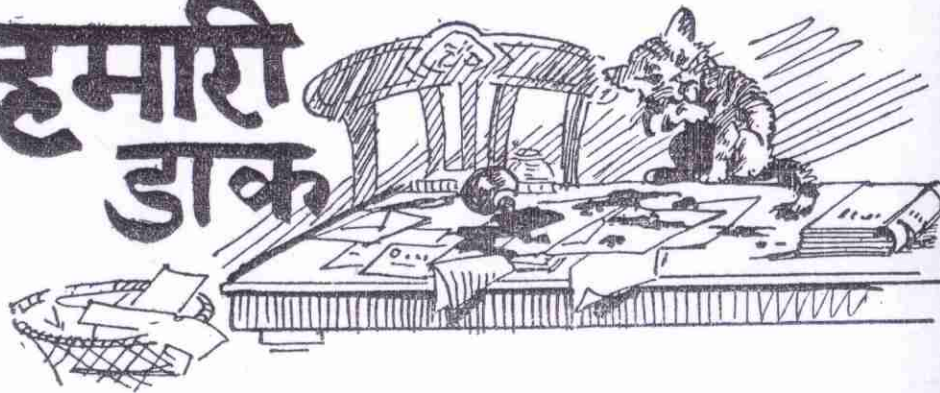
"महाशयजी, प्रणाम, मैं कुछ और मासिक पत्र मँगाता हूँ उन सबमें मुझे बाल-सखा प्रिय मालूम होता है। मैं अगले साल भी ग्राहक बनूँगा। क्योंकि इसके पढ़ने से अच्छे अच्छे उपदेश मिलते हैं। मेरा बाल-सखा आज ही आया है। उसमें मैंने अन्धा-मेटकाफ का हाल पढ़ा। देखिए वह अन्धा था तिस पर भी कैसे कैसे काम किये? आपका—विष्णु उदोबाजी, मुलताई।"

× × × × ×

विलासपुर से श्रीयुत गिरीशकुमार वर्मा लिखते हैं—"मेरे कई बार सभी उत्तर सही निकले पर मेरा नाम नहीं छपा। इससे मालूम होता है कि बाल-सखा को जितना प्रेम यू० पी० के बालकों से है उतना सी० पी० के बालकों से नहीं। क्योंकि यू० पी० के बालकों के ही नाम अधिक दिखाई देते हैं।"

प्रिय गिरीश! यह तुम्हारा ग़लत अनुमान है। इससे जान पड़ता है कि तुम

बाल-सखा ग़ौर से नहीं पढ़ते हो। और अपना अवगुण दूसरों के मत्थे मढ़ना चाहते हो। अप्रेल का बाल-सखा देखो। १६० पृष्ठ पर तुम्हारा नाम सी० पी० के कितने ही बालकों के साथ मौजूद है।

× × ×

हम प्रतिमास यह देखते हैं कि बालक चिट्ठियाँ बड़ी लापरवाही से लिखते हैं। घसीट लिखने का शौक मानों सभी को है। केवल ख़राब अक्षर लिखने के कारण कितने ही लड़के इम्तहान में फेल हो जाते हैं। पहेलियों के आधे से ज्यादा जवाब भी हम योंही फेंक देते हैं क्योंकि वे पढ़े नहीं जाते। आशा है हमारे छोटे पाठक इस बात पर ध्यान देंगे और आइन्दा से जो कुछ भी लिखेंगे ख़ूब बनाकर लिखेंगे।

× × × × ×

इस महीने में हमें जो पुस्तकें समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं उनमें 'मेरी रूस-यात्रा' हमें बहुत पसन्द आई। इसके लेखक शौकत उसमानी हिन्दुस्तान से रूस तक पैदल गये थे। रास्ते में उन्होंने क्या देखा, कैसी मुसीबतें झेलीं, आदि बातों का अच्छा ज़िक्र किया है। हर एक उत्साही बालक को यह पुस्तक प्रताप प्रेस, कानपुर से मँगाकर पढ़नी चाहिए। दाम ।।=) है।

जुलाई सन् १९२८ की पहेलियों के उत्तर

१—(क) चना (ख) छाता २—(क) माया (ख) गङ्गाजी

३—महात्मा गान्धी, पंडित मोतीलाल नेहरू, पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, पंडित जवाहिरलाल नेहरू ।

४—इस प्रश्न का जवाब सितम्बर के अङ्क में प्रकाशित किया जायगा ।

इनाम का फ़ैसला

(१) बाई साहेब लक्ष्मीकुँवरजी के पास इस प्रश्न के उत्तर भेजे गये थे। उन्होंने श्रीमती सरोजनी देवी जोशी, सुल्तानपुर को २) इनाम दिया और निम्नलिखित की प्रशंसा की :—

सावित्रीदेवी, मिर्ज़ापूर । लुम्भराज भीम अन्नपूर्णा, छपरा । नटवरलाल झा, आगरा रामभरोसेलाल, उरई । रामगोविन्दप्रसाद, सहँतवार । ब्रह्मानन्द, मेरठ । शान्तीकुमार, आगरा रामकृष्ण गुप्त, देहली । श्यामनारायण, प्रयाग । प्राणनाथ, अजमेर । कुमारी शारदादेवी भार्गव, लखनऊ । राघोबा, लोधीखेडा । विश्वनाथ टन्डन, कानपुर । द्रौपदीदेवी, इलाहाबाद हरीसेवक, मथुरा । मनसुखलाल सुनार, नरसिंहपूर । ईश्वरसिंह भीमदेवी जानकीवती, घोषपुर

(२) इस प्रश्न के उत्तर श्रीमती सरस्वती देवी, मौरावाँ के पास भेज दिये गये थे । उन्होंने श्रीमती शकुन्तला कुमारी, मेरठ को २) इनाम दिया और निम्नलिखित की प्रशंसा की :—

दुर्गेशनन्दिनी । रतनचन्द्र जैन । जिनेन्द्रकुवँर जैन । वी० पी० श्रीवास्तव । शिवप्रसाद सिंह विद्यार्थी । तारा प्रसन्न सरकार ।

(३) श्रीयुत रामसेवक नागर ने किसी का उत्तर पसन्द नहीं किया । उनका कहना था कि प्रायः सब लड़कों ने पूछ पूछ कर जवाब लिखा है । निर्णय का भार उन्होंने सम्पादक पर छोड़ दिया खूब छानबीन के बाद १) का यह इनाम शारदादेवी बहावलपुर को दिया गया । प्रकाश-नारायण पांडे और प्रेमचन्द कलार का उत्तर भी प्रशंसनीय था ।

(४) इस प्रश्न के भी बहुत से उत्तर आये पर श्रीयुत नन्दकिशोर, अम्बाला का उत्तर सबसे अच्छा रहा । उन्हें पुस्तक-पुरस्कार दिया गया । जवाब लम्बा है । इसलिए सितम्बर के अङ्क में छपेगा ।

Printed and Published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.